7 SEP 2019

दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

मॉडल पेपर-I

(संपूर्ण पाठ्यक्रम)

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

DTVF/19 (N-M)–OPS–**H15/7**

Name: Naven Gahlawat **Mobile Number:** ____________

Medium (English/Hindi): HINDI **Reg. Number:** FP/July-19/760

Center & Date: 07/9/19 / M.K. Nagar **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** ———

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न है जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS and printed both in HINDI & ENGLISH.
Candidate has to attempt FIVE questions in all.
Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE from each section.
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (a) आर्य आक्रमण की संकल्पना का पुरातात्विक साक्ष्यों के आलोक में विश्लेषण कीजिये। 15

Analyze the concept of Aryan invasion in the light of archaeological evidence. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सिंधु घाटी सभ्यता के पतन में विद्वानों में ~~के~~ मतैक्यता का अभाव दिखता है। इसके पतन के अनेक सिद्धांतों में ~~से~~ आर्य आक्रमण का सिद्धांत भी है। जिसे विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है।

- इन्द्र को वैदिक साहित्य में पुरंदर कहा गया है जो बड़े-बड़े किलो को तोड़ता है।

- बांधों के नष्ट होने के साक्ष्य जो सम्भवतः विदेशी आक्रमण ~~करके~~ प्राप्त हुए है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- आर्यों ने अनार्यों के समूह को हरियुपिया नामक स्थान पर पराजित किया था। हरियुपिया की पहचान हड़प्पा से की जाती है।
- मोहनजोदड़ो मे मिले हथियार व नरकंकाल
- आभूषणों के जमीन मे दबाने के साक्ष्यो से भी ऐसा प्रस्तुत होता है कि ये आक्रमणकारियों के डर से रहा होगा।

किंतु कुछ साक्ष्यों के आधार पर यह ~~सिद्धांत~~ सिद्धांत सत्य प्रतीत नही होता निम्न आधार पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाता है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- आर्य आक्रमण व सभ्यता के अंत में अंतराल है।
- उत्खनन में आर्यों से सम्बंधित कोई विशेष वस्तु नहीं मिली है
- मोहनजोदड़ो में मिले नरकंकाल एक समय के नहीं बल्कि 36 कंकाल ही मिले है।

अतः आर्य आक्रमण का अनुमान साक्ष्यों के आधार पर लगाया तो जाता है किंतु विद्वानों के मतैक्य का अभाव भी दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(b) "अशोक के काल में अहिंसा की नीति को राज्य-नीति के रूप में अपनाया जाना भारतीय इतिहास की विशिष्ट एवं एकमात्र घटना थी।" विश्लेषण कीजिये। 20

"During the era of Ashoka, the policy of non-violence was adopted as a state policy, was the specific and only event in Indian history." Analyze. 20

अशोक के काल की 13 वे ~~सिलालेख~~ अभिलेख से विशिष्ट जानकारी मिलती है। कलिंग पर अशोक के आक्रमण के बाद उसका हृदय परिवर्तन हुआ तथा उसने युद्धों को त्याग कर अहिंसावादी नीति अपनायी। दिव्यावदान से हमें हृदय परिवर्तन की जानकारी मिलती है कि अशोक ने एक लाख लाशों को देखकर यह नीति अपनायी।

हालांकि विद्वानों में भी मतैक्य का अभाव है कि यह कलिंग युद्ध से हृदय परिवर्तन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का परिणाम माना भी था उनकी
व्यवहारिकता का परिचय ~~देती~~ है।
वहीं यह भी अनुमान लगाया जाता
है कि यह मौर्य साम्राज्य के पतन
का कारण बनी — H.C राय चौधरी

इस नीति के लाने के कारण

- साम्राज्य का आकार वृहद हो गया था।
- बौद्ध धर्म व ब्राह्मण धर्म में टकराव की स्थिति थी
- अशोक द्वारा साम्राज्य पर नियंत्रण हेतु धम्म लाना तथा धम्म अधिकारी का परिचय देता है,
- कलिंग जीतने के बाद साम्राज्य 5 प्रांतों में विभाजित व कोई अन्य चुनौती नहीं बची।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

– साम्राज्य में बहुप्रजातियता के लक्षित विस कारण अहिंसा से ही सम्भव था

हालांकि यह पतन का कारण नहीं था क्योंकि अशोक के बाद उत्तराधिकारी कमजोर होते गए तथा शुंग विद्रोह इसी नीति का परिणाम हो सकता है।

अतः जो भी हो किंतु ऐसी अहिंसावादी नीति का दृश्य आधुनिक भारत में गांधीवाद में ही देखने को मिलता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) दक्षिण भारत में आखेट अर्थव्यवस्था से खाद्य उत्पादक अर्थव्यवस्था में संक्रमण की समस्या को स्पष्ट करते हुए दक्षिण भारत के प्रारंभिक किसान पर प्रकाश डालिये। 15

While describing the problem of transition from the Hunting economy to the food-producing economy in South India, throw light on the early farmers of South India. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पाषाण काल में मनुष्य आखेट से ही भोजन का प्रबंध करता था। वहीं नवपाषाण काल में वह अनाज का उत्पादन करने लगा, तथा दुग्ध से बने पदार्थों को प्रयोग में लाने लगा।

पाषाण काल से आग का अविष्कार होने पर वह पका हुआ भोजन तथा ~~हथियारों~~ पाषाण के औजारों के बदलते स्वरूप से पता चलता है कि उसने अतः पेड़ काटना व शाकाहारी भोजन शुरू कर दिया होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

चिरांदी प्रस्तर पत्थर की कुल्हाड़ी व अन्य औजारों से होती है।

गार्डन चाइल्ड ने इस घटना को खाद्य क्रांति की संज्ञा दी है।

मध्यपाषाण काल में यह खाद्य उत्पादन करने लगा था। जहाँ पर गेहूँ, जौ व अन्य फसलों के साक्ष्य मिलते हैं।

संगम साहित्य स्पष्ट रूप से कृषकों की जानकारी देता है कि चिरांदी कृषकों को वेल्लार कहा जाता था तथा संगम साहित्य में कृषि की पूर्ण जानकारी तथा आर्थिक सेवाओं का विभाजन भी मिलता है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

संगम साहित्य में कडैसियर जाति का उल्लेख है जो भूमि हीन कृषक ही थे तथा भूमि को साफ करने का कार्य करते थे

अतः

प्राचीन कृषकों संग दासता। भारतीय इतिहास संक्रमण की अवस्था से गुजरा है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

4. (a) मौर्योत्तर भारत में विदेशी शासकों के सांस्कृतिक समावेशन तथा तत्कालीन कला-स्थापत्य पर इसके प्रभावों की समीक्षा कीजिये। 20

Criticize the cultural inclusion of foreign rulers and their effects on erstwhile art architecture in the post-Mauryan period in India. 20

मौर्योत्तर काल के विदेशी शासकों भारत आना तथा सांस्कृतिक समावेशन एक अभिन्न व्यवस्था थी

- विम कडफिसस को शैव बताया गया है।
- वहीं मिनान्डर ने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था जिसकी पुष्टि मिलिंदपन्हो से मिलती है,
- हेलियोडोरस द्वारा गरुड़ ध्वज का निर्माण किया जो ~~अपने~~ उनके वैष्णव धर्म अपनाने की जानकारी देता है
- कुषाणों के सिक्कों पर भारतीय देवी देवताओं का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिंग अंकन होना

- कनिष्क को प्रधान बौद्ध संरक्षक के रूप में देखा जाता है। इसी प्रकार विदेशी शासकों द्वारा भारतीय खान पान और पोशाकों को अपनाया गया। इसकी पुष्टि भारतीय कला से भी मिलती है।

- मथुरा कला में शासकों की मूर्तियाँ बनाई गई जिनमें विम व कनिष्क की मूर्तियाँ प्रमुख है।

- कुषाणों के पतन के बाद क्षेत्रीयता का प्रसार व विदेशी प्रभाव इनकी पहचान पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पड़ा।

- स्तूपों का निर्माण करवाया गया जिनके गांधार क्षेत्र में कनिष्क द्वारा बनवाया गया स्तूप प्रमुख है।

- सिक्कों पर देवी देवताओं व शासकों की चित्रांकन अंकन किये गए।

अतः मौर्योत्तर काल के विदेशी शासक भी महान भारतीय संस्कृति से प्रभावित ही नहीं हुए बल्कि उसे अपना लिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) पल्लवकालीन जनजीवन में स्थानीय सामूहिक एककों की महत्ता पर प्रकाश डालिये। 15

Throw light on the importance of local collective units in Pallavan public affairs. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संगम साहित्य के बाद दक्षिण भारत में पल्लव कालीन व्यवस्था में ही शासन की व्यवस्था की जानकारी मिलती है।

इस समय आर्यकरण की प्रक्रिया में इस प्रकार दक्षिण भारत में वर्ण व्यवस्था तथा स्थानीय बड़े किसानों में से ही प्रभावशाली वर्ग का उदय हुआ अतः वह शासक बन गया।

पल्लव कालीन शासकों द्वारा ब्राह्मणों को व्यापक स्तर पर भूमि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दान की गई। तथा ब्रह्मदेय व मंदिरों को दी जाने वाली देवदान प्रथा अब सर्वव्यापक रूप धारण कर चुकी थी। भक्ति के विस्तार से मंदिरों का निर्माण किया जाने लगा जो बाजार व सत्यागत हो गए थे।

समाज को भी ~~[illegible]~~ द्विवर्ण में विभाजित किया जाता है ब्राह्मण व शूद्र क्षत्रियों व ~~[illegible]~~ वैश्यों की अनुपस्थिति दिखती है हालांकि कुछ वर्ग व्यापार में लगे थे किंतु उनकी स्थिति निम्न प्रकार की थी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

स्थानीय स्तर पर नाडु व उरु प्रकार की संस्था भी थी जो स्थानीय शासन में भाग लेती थी। यही संस्था चोल काल की विशेषता बन गयी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) मौर्यकालीन गंगा घाटी में उत्पादन के भौतिक व सामाजिक आधार का विश्लेषण कीजिये। 15

Analyze the physical and social basis of production in the Mauryan Gangetic valley. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौर्य काल में उत्पादन वृद्धि का मुख्य कारण राज्य निर्माण व केन्द्रीकरण की व्यवस्था थी जिसकी मुख्य विशेषता थी

- केन्द्रीकरण
- शासकों द्वारा सम्पत्ति
- राज्य का कड़ा प्रबंधन

इसकी जानकारी हमें अर्थशास्त्र से मिलती है।

उत्पादन का भौतिक आधार

- उपजाऊ नदी घाटी जो या वर्तमान समय में भी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

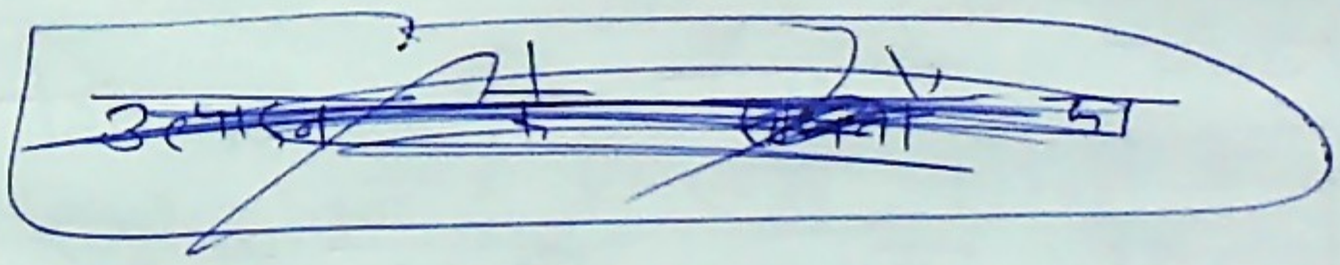

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2 वैज्ञानिक कृषि का प्रयोग व सिंचाई – रहटदार कुएं, नील/बाग की खेती

3 जनसामान्य वृद्धि – निर्यात उत्पादन हेतु प्रोत्साहन व अधिग्रहण का उपयोग

4 शिल्प व्यवस्था – व्यापार व शिल्पी कार्यों से नगरीय क्रांति व निर्यात उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता।

5 केन्द्रीकरण से शांति व्यवस्था निर्यात संसाधनों की लामबंदी की गई तथा उत्पादन में वृद्धि

[उत्पादन का सामाजिक आधार]

6 नए वर्गों द्वारा कृषि कार्यों में संलग्नता ~~ताकि~~ निर्यात उत्पादन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वृद्धि। कौटिल्य शुल्काध्यक्षों का उल्लेख करता है।

(2) बंदी दासों को भी कृषि कार्य में लगाया जाता था। कौटिल्य 9 प्रकार के दासों का ~~प्रक्रक~~ उल्लेख करता है

(3) राज्य द्वारा अपराधी व्यक्ति की पकालत व महिलाओं द्वारा उत्पादन में शामिल होने का उल्लेख भी मिलता है,

अतः ~~इस~~ नगर निर्माण व उत्पादन में सफलता दिखती है तथा इससे भौतिक व सामाजिक आधार तैयार होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$
Answer the following in about 150 words each:

(a) प्रारंभिक मध्ययुगीन भारत में कृषि क्षेत्र में तकनीकी सुधारों पर प्रकाश डालिये।
Throw light on the technical reforms in the agricultural sector in early medieval India.

प्रारंभिक मध्यकाल में

कृषि विस्तार उच्च विशेषता एवं जिसका प्रमुख कारण था — भूमिदान व सामंती प्रथा

इस काल में कृषि क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन निम्न हैं

— सिंचाई क्षेत्र में अरघट्ट या घटीयंत्र का प्रयोग किया गया जिससे सिंचाई की व्यवस्था में सुधार हुआ।

— लोहे के औजारों में अधिक स्वच्छता आई जिससे भूमि को जोतना सरल हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- अलबरूनी नहर कमलों के प्रवेश का उल्लेख करता है।

- कृषि क्षेत्र में मौसम आधारित कृषि की जाने लगी

- रहट व साकिया का प्रयोग होने लगा। इसका पहला प्रयोग सिंध क्षेत्र में मिलता है

- कपास के बीजों को अलग करने हेतु धुनिया की मशीन का प्रयोग किया जाता था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) 8वीं से 13वीं सदी के मध्य निर्मित मंदिरों के स्थापत्य पर पारिस्थितिकी, निर्माण सामग्री एवं क्षेत्रीयता के प्रभावों की चर्चा कीजिये।

Discuss the impact of circumstantial, construction materials and region on the architecture of temples built between 8th to 13th century.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8वीं सदी में मंदिरों की तीनों ही शैलियों का विस्तार हो चुका था। उत्तर भारत में नागर, दक्षिण में द्रविड़, दक्कन क्षेत्र में बेसर

वहीं नागर शैली में भी क्षेत्रीय भिन्नता दिखती है

— कश्मीर के मंदिरों में पहाड़ी क्षेत्र होने से छतों को ढलवुआ व लकड़ी का प्रयोग किया गया है।

वहीं उड़ीसा के मंदिरों में अलंकरण व उनके नामों में भिन्नता दिखती है,

खजुराहो के मंदिरों को चबूतरे पर बनाया गया है तथा बाहर से मंदिर एक श्रृंखला के रूप

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में दिखते है।

इसी प्रकार ~~द्र~~ बेसर शैली में के मंदिरों में होयसाल व चालुक्य प्रभाव है। होयसाल में भी अलंकृत दिवारें व तारकार प्रारूप प्रभाव है।

वहीं द्रविड़ शैली में पल्लवों के काल में एकाश्म मंदिरों का निर्माण रथ व मंडपों को बनाया गया तथा चोल काल में रथों का प्रयोग किया गया।

अतः मंदिरों के निर्माण में शैलीगत भिन्नता दिखती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) मुगल काल के आरंभिक चरण से जहाँगीर के काल तक चित्रकला शैली में आए बदलावों पर प्रकाश डालिये। 15

Throw light on the changes in the school of painting from the earliest phase of the Mughal era to the reign of Jahangir. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाबरनामा में बाबर चित्रकला का उल्लेख करता है किंतु यह केवल लेखन में ही है। हुमायूँ अपने प्रवास काल में ईरान से दो चित्रकारों को साथ लाया जिनका नाम मीर सैयद अली व अब्दुस समद था

अकबर के काल में चित्रकला का मुख्य रूप लघु चित्रकला रहा इसी समय तस्वीर निर्माण की प्रक्रिया भी शुरू हुई तथा भित्ति चित्रों के प्रारम्भ भी इसी समय हुआ जिसमें ईरानी व यूरोपीय प्रभाव चित्रकला पर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

देखा जा सकता है,

जहाँगीर ने चित्रकला में स्वयं रुची ली तथा वह स्वयं भी चित्रकार था इसका प्रभाव चित्रकार अबुल हसन तथा तथा बाद में मंसूर भी पशु-पक्षियों के चित्रों हेतु मशहूर चित्रकार रहे

इसी समय एलबम निर्माण कि प्रक्रिया शुरू हुई जिसमें सभी लघु चित्रों को एक ही जगह पर लाया गया।

यदि विदेशी शैली गत प्रभाव की बात करें तो ईरानी प्रभाव व यूरोपीय प्रभाव रहा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ईरानी प्रभाव - समतल पृष्ठभूमि, 2D चित्र

प्रकृति - पहाड़ों के दृश्य, बगीचे, पक्षी रंगों का प्रयोग।

यूरोपीय प्रभाव - [illegible] पोर्ट्रेट, प्रकाश व छाया ज्ञान, दूर की वस्तु छोटी व पास की बड़ी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation